शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 14
Issue 1&2
15July 2023

भारतीय ज्ञान परम्परा एंव राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०

बीज शब्द :

भारतीय परम्परा, बुनियादी ज्ञान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, अर्वाचीन ज्ञान

आजादी के 75 वर्ष बाद भी हम अपने दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक निकटता एवं समन्वय से कोसों दूर हैं। भारत के उत्थान के लिए हमें अपने ज्ञान को जानना, समझना और फैलाना बहुत जरूरी है। प्राचीन काल से ही भारत अपने धार्मिक ग्रंथों, संस्कृति और बहुसंस्कृतिवाद के लिए प्रसिद्ध रहा है। ताकि स्वस्थ भारत और संस्कृति की पुनः स्थापना हो सके। इस शिक्षा नीति की परिकल्पना है कि एक बच्चे को वैश्विक नागरिक तभी माना जा सकता है जब वह अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल के माध्यम से सतत विकास, समृद्ध आजीविका और वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो सके। इस दृष्टि को साकार करने के लिए मौजूदा ज्ञान, परंपरा, रीति-रिवाजों, विचारों और मूल्यों को सुविचारित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा न कि एक अलग विषय के रूप में। यदि ज्ञान को बालक के विकास में स्थापित करके प्रदान किया जाए तो भी ज्ञान के अनुरूप होना संभव है। इस लेख में शोधकर्त्री ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता का विश्लेषण किया है।एकीख्रत करना होगा न कि एक अलग विषय के रूप में।

*****

डॉ० अनीता अरोरा
एसोसिएट प्रोफेसर ,
वी0एम0एल0जी0कालेज, गाजियाबाद
श्रीमती सुनीता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
नोएडा कालेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन, नोएडा

भारतीय ज्ञान परम्परा एंव राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०

संस्कृत, संस्कृति और भारतीयता केवल शब्द नहीं बल्कि भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा से घनिष्ठता से जुडे हैं। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय उन्नति, तथा सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान के लिए शिक्षा आवश्यक है। भारत के महान शिक्षकों ने शिक्षा के इस गहन महत्व को समझा था। इसके परिणामस्वरूप भारत में वैदिक काल में शिक्षा की एक सुन्दर व्यवस्था का निर्माण हुआ जिसका मुख्य आधार गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था थी। प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को दुनिया की पहली सनातन ध र्म शिक्षा प्रणाली के रूप में जाना जाता है। यह एक प्रकार से आवासीय विद्यालय शिक्षा प्रणाली के समान थी, जिसकी उत्पत्ति भारतीय उपमहाद्वीप में ईसा से लगभग 5000 वर्ष पूर्व मानी जाती है। इन आश्रमों में अनादि काल से अनेक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते रहे और यह व्यवस्था गुरु-शिष्य परम्परा के रूप में भारत में लम्बे समय तक चलती रही। भारत की इस महान शैक्षिक परंपरा ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया और अखंडता, विनम्रता, आत्मनिर्भरता, अनुशासन और आपसी प्रेम और सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर दिया। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने विशाल वैदिक साहित्य को संरक्षित किया और ज्ञान को बढ़ावा दिया।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचारकों और विद्वानों को जन्म दिया, जिनके कारण भारत का मस्तक आज भी यश और गौरव से ऊंचा है। इस प्रकार हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा अनादिकाल से सतत, दीर्घकालीन एवं शाश्वत रही है, जो संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए प्रयासरत है। अत: वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य की सोच की कई सीमाएं हैं, लेकिन पश्चिमी ज्ञान इसका विरोध करता रहा है और ज्ञान की एक ही धारा का जश्न मनाता रहा है और उसका प्रसार करता रहा है। हम सब आज भी उस धारा का हिस्सा बने हुए हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली, जो प्राचीन काल से प्रचलित है, सदैव भारतीय ज्ञान को दबाने और पश्चिमी ज्ञान को थोपने का प्रयास करती रही है। यही कारण है कि आजादी के 75 वर्ष बाद भी हम अपने दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक समरसता एवं समन्वय से कोसों दूर हैं। भारत के विकास के लिए हमें अपने ज्ञान को जानना, समझना और फैलाना बहुत जरूरी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा व्यवस्था में स्थान देने से हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को बेहतर बनाने का अवसर मिला है। इस चर्चा के माध्यम से हम भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना देख सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा

प्राचीन काल से ही भारत अपने धार्मिक ग्रंथों, संस्कृति और बहुभाषावाद के लिए प्रसिद्ध रहा है। ये तीन गुण सिर्फ शब्द नहीं बल्कि हर भारतीय का हिस्सा हैं जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिले हैं। भारतीय संस्कृति की समझ, संरक्षण और संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान आवश्यक है। इसके बिना हम बच्चे के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं कर सकते। बच्चा जिस वातावरण में रहता है उसे आत्मसात कर लेता है, यही कारण है कि भारतीयों में भारतीय संस्कृति के अंश स्वत: ही झलकने लगते हैं। इसलिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी, 2020) में शिक्षा क्षेत्र के हर स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को शामिल करने पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय न केवल डॉक्टर और छात्र दोनों को अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराएगा, बल्कि वर्तमान में संतुलित व्यवहार और सामाजिक स्थिरता की समझ भी पैदा करेगा।

हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अधिकतर मनसा, वाचा, कर्माणा पर आधारित थी। इसने सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, भावनात्मक आदि विकास पर ध्यान केन्द्रित किया है और आत्मनिर्भरता, सम्मान, सच्चाई, विनम्रता जैसे शाश्वत मूल्यों के निर्माण पर बल दिया है। जिससे पता चलता है कि प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली का स्वरूप व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन को सुचारु रूप से चलाने में सहायक रहा है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति न केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को हमारी शिक्षा का अंग बना रही है बल्कि रक्षा, रामानुजम, सुश्रुत, आर्यभट्ट, बुद्ध, रैदास, बाल्माकि, विसमिल्लाह खान जैसे अतीत में जन्मे सभी महान व्यक्तित्वों को भी हमारी शिक्षा का हिस्सा बना रही है। महात्मा गांधी, भगत सिंह, गार्गी, अपाला, घोषा, सावित्री, रमाबाई, रजिया सुल्तान मदर टेरेसा, एनी बेसेंट आदि की कहानियों और कार्यों को वर्तमान प्रासंगिकता के अनुसार शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है। हम ऐसा इसलिए कर रहे हैं ताकि स्वस्थ भारत और संस्कृति की पुन:

स्थापना हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह व्यापक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक क्षमता के निर्माण में सहायक होगा। भारतीय दृष्टिकोण से ज्ञान प्राप्त करके ही हम विश्व गुरु बनने की कल्पना कर सकते हैं क्योंकि किसी भी देश का विकास उसकी अपनी रचनात्मकता और विशिष्टता पर निर्भर करता है और भारत विभिन्न सांस्कृतिक वैभव से परिपूर्ण देश है। अतः भारत को अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा को पुनः खोजने का प्रयास करना होगा।

सबसे पहले हमें यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि भारतीय ज्ञान परंपरा क्या है और हमारी शिक्षा व्यवस्था में इसकी आवश्यकता क्या है? जैसा कि नाम से ही पता चलता है, कि, भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय संस्कृति के विभिन्न कालखंडों से प्राप्त अद्वितीय ज्ञान और बुद्धिमत्ता का प्रतिनिधित्व करती है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान, प्रबंधन, ज्योतिष विद्या, कर्म, धर्म, त्याग, भोग, तपस्या, सभी प्रकार के भौतिक एवं पारलौकिक अद्भुत ज्ञान का संगम है। इसका विस्तृत रूप भारतीय ग्रंथों में देखा जा सकता है। पुराण, वेद, वेदांग, वांगमय, रामायण, ब्राह्मण ग्रन्थ आदि ज्ञान को मानव जीवन का सर्वोत्तम अंग मानते आये हैं और मनुष्य को ज्ञानवान बनाने का प्रयास करते आये हैं।

प्राचीन काल की गुरुकुल व्यवस्था इन्हीं शास्त्रों के अधीन थी। जिसके अंतर्गत गुरु अपने शिष्य को पवित्र ज्ञान से गुजारने का प्रयास करता है। इसके द्वारा ही बालक के नैतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं तार्किक गुणों का विकास होता था। बच्चों को शुरू से ही इंसानों, जानवरों और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखना सिखाया जाता था। इतना ही नहीं, शिक्षण के माध्यम से बच्चों को वेदों को पढ़ना, उनका पालन करना सिखाया जाता था, जिसका प्रभाव उनके दैनिक जीवन पर भी पड़ता था। जिससे बच्चे समाज और अपने परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार बने, इस प्रकार इस काल की शिक्षा प्रणाली में जीवन से संबंधित सभी बुनियादी पहलू मौजूद थे।

यह शैक्षणिक प्रणाली सीखने और शारीरिक विकास दोनों पहलुओं पर केंद्रित थी। जैसा कि विष्णु पुराण में भी कहा गया है, कर्म वही है जो किसी को बंधन से मुक्त करता है और शिक्षा वही है जो मुक्ति का मार्ग प्रदान करती है, शेष कर्म पूर्णता प्रदान करने का काम करते है। शिक्षा की इस अवधारणा को अपनाते हुए भारतीय शिक्षा प्रणाली ने सभी मठों, गुरुकुलों, विश्वविद्यालयों, मंदिरों, स्कूलों और कभी-कभी अन्य शैक्षणिक संस्थानों में स्वदेशी शिक्षा प्रदान करना शुरू कर दिया। इन सभी संस्थाओं में शिक्षा का मुख्य स्रोत मौखिक भाषण था।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली आधुनिक ज्ञान, विज्ञान, प्रकृति प्रेम और मानवता को प्रोत्साहित करने वाली थी। ब्राह्मण पुराण में भी ज्ञान को सर्वोच्च माना गया है जो मनुष्य को रचनात्मक बनाता है। ज्ञान के इन रूपों का विस्तार भारत के नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, उज्जैनी, काशी, वल्लभी आदि विश्वविद्यालयों द्वारा किया गया, जिसमें न केवल भारत के बल्कि पड़ोसी देशों के चिकित्सकों और दार्शनिकों ने भी ज्ञान प्राप्त किया। गार्गी, अपाला, ऋतंभरा, मैत्रिया लोपामुद्रा आदि विदुषी महिलाओं ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। वह्री चरक, कात्यायन, आर्यभट्ट, शंकराचार्य, विवेकानंद, महात्मा गांधी, वाराहमिहिर, कणाद आदि ने अपनी बुद्धि से भारत भूमि को धन्य किया है। पुराणों में त्याग, लोभ और लालच से मुक्त व्यक्ति को ही गुरु माना गया है। वायु पुराण में गुरु की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सभी तीर्थो में सबसे शुभ तीर्थ गुरु रूपी तीर्थ है, जहां से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग शुरू होता है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्य को पशु जीवन से मुक्त कर मानवता का अमृत पान कराती है। इसे शिक्षा व्यवस्था से हटाना अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता प्राचीन गौरवशाली भारतीय ज्ञान परंपरा पूरे विश्व को आलोकित करने वाली है। प्राचीन भारतीय कला के प्रमाण विभिन्न वेदों, वेदांगों, उपनिषदों, श्रुतिश्रुत, स्मृति, रामायण और श्रीमद्भगवद्गीता में मौजूद हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा जो वैदिक और उपनिषद काल में विद्यमान थी, वही बौद्ध और जैन काल में भी विद्यमान थी। इसके अंतर्गत महान गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से कई वर्षों से प्राप्त ज्ञान को आत्मसात और विश्लेषण करके नए ज्ञान का संश्लेषण किया गया। प्राचीन काल की ज्ञान प्रणाली, परंपराओं और प्रथाओं ने मानवता को प्रोत्साहित किया। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आने वाली तथाकथित नई खोजें जिनका उल्लेख हमारे ग्रंथों में पहले से ही है, ये सभी भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्धि के प्रमाण हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली का वर्तमान परिदृश्य इसमें यह और भी अधिक प्रासंगिक है, जो व्यक्ति को कर्तव्य की भावना, स्थिरता और तनाव प्रबंधन आदि को समायोजित करने के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ विभिन्न ज्ञान-विज्ञान, सांसारिक और पारलौकिक रहस्यों को समझने के लिए एक सटीक निर्देश के रूप में भी कार्य करता है। इसमें वेद

और उपनिषद, दर्शन और प्रबंधन, ज्ञान और विज्ञान, धर्म , कर्म और योग से संबंधित ज्ञान का विशाल भंडार विश्व के कल्याण और मानवता के उद्धार के लिए उपयोग किया जा सकता है। अतः अब समय आ गया है कि भारत के वर्तमान अमृत काल में भारत द्वारा दिये गये ज्ञान को विश्व को प्रचारित किया जाये और भारत के प्रत्येक नागरिक को इसे भारत की मूल संस्कृति और अर्जित ज्ञान से जोड़ा जाना चाहिए।

भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

भूमिका

भारत की ज्ञान परंपरा इस समय चर्चा के केंद्र में है, क्योंकि केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति 2020 में भारत की सांस्कृतिक नींव को ठीक से जानने और समझने पर जोर दिया गया है। इसके तहत पारंपरिक ज्ञान, कला कौशल और मूल्यों को शिक्षा से जोड़ने और उसके नए प्रयोगों की सिफारिशें की गई हैं। चूंकि भारत में समग्र एवं अनेक विषयों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने की प्राचीन परंपरा रही है। इसलिए, प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और विज्ञान की समृद्ध परंपरा के अनुसरण में, यह शिक्षा नीति शिक्षक प्रशिक्षण, समग्र और बहु-विषयक शिक्षा और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर केंद्रित है। इसके क्रियान्वयन हेतु वर्तमान में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ बनाया गया है, जिसका उद्देश्य स्वदेशी ज्ञान एवं शिक्षण परंपरा को प्रोत्साहित एवं आगे बढ़ाना है। इसी दिशा में वर्ष 2020 में लागू की गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर जोर दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की विभिन्न अवधारणाओं को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए वर्ष 2022-2023 के बजट में भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन, प्रचार-प्रसार और अवलोकन के लिए निर्धारित राशि को बढ़ाकर 20 करोड़ रुपये कर दिया गया। इसके अलावा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग वर्ष 2025 तक 15 लाख शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रशिक्षण भी देगा। वर्तमान में आयोग ने विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर पर एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी शुरू किया है। इसके अलावा विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों जैसे स्वयं पोर्टल, स्वयं प्रभा, ई-दीक्षा, ज्ञान दर्शन आदि के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भी इसके प्रचार-प्रसार का प्रावधान किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि भारत को बहुमुखी प्रतिभा वाले सक्षम और कुशल छात्रों को तैयार करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा को वापस लाने की जरूरत है ताकि छात्र कम उम्र से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ नैतिक और चारित्रिक गुणों से लैस हों। जा सकते हैं। यह नीति भारत की समृद्ध विविधता, संसाधनों, संस्कृति और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए भारत के युवाओं, शिक्षकों और शिक्षार्थियों के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और रचनात्मक शिक्षा के साथ-साथ आपसी सहयोग, एकता और भाईचारे की भावना के विकास पर जोर देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सनातन ज्ञान परम्परा की उपयोगिता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को भारत की शाश्वत ज्ञान और बुद्धिमत्ता की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के स्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को भी एक केंद्रीय स्तंभ माना गया है, जहाँ शिक्षा की प्राथमिक इकाई (पूर्व-प्राथमिक शिक्षा) से लेकर शिक्षा की अंतिम इकाई (प्रौढ़ शिक्षा) तक भारतीय ज्ञान को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस शिक्षा नीति की परिकल्पना है कि एक छात्र को वैश्विक नागरिक तभी माना जा सकता है जब उसका ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल सतत विकास, समृद्ध जीवन और वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध हो सके। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए सनातन ज्ञान, परंपरा, रीति-रिवाज, और मूल्यों को निर्धारित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा न कि इसे एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान करना होगा, तभी बच्चे का विकास होगा। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जिसमें कोई भी छात्र सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं अन्य भेदभाव के कारण पीछे नहीं छूटेगा। जिसके लिए सर्व शिक्षा अभियान को समग्र शिक्षा के रूप में परिभाषित किया गया है और वर्ष 2030 तक सभी बच्चों का प्राथमिक विद्यालयों में 100% नामांकन कराने का लक्ष्य रखा गया है। जो भारत को नई दिशा देने में सहायक होगा (एनईपी, 2020)। भाषाई विसंगति को दूर करते हुए यह शिक्षा नीति सभी बच्चों को प्राथमिक स्तर की शिक्षा उनकी मातृभाषा (हिंदी) या स्थानीय भाषा (गैर-हिंदी क्षेत्रों के लिए) में प्रदान करने की बात करती है जिससे बच्चे को बुनियादी जरूरतों और मूल्यों को जानने में मदद मिलेगी। इससे बच्चा अपनी जरूरी जरूरतों को पूरा कर सकेगा। सामाजिक विज्ञान (इतिहास, भूगोल, राजनीति, समाजशास्त्र आदि) में शामिल लक्ष्य और उद्देश्य भारतीय ज्ञान, परंपरा, वास्तुकला और परंपरा आदि के बारे में सीखने और सिखाने का अवसर प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, पाठ्यक्रम में स्थानीय ज्ञान और सनातन ज्ञान की उपलब्धता भारतीय साहित्य और अन्य विषयों से बच्चे को अपने देश के बारे में जानने में मदद मिलेगी। इसलिए जहां भी संभव हो, कला, संगीत, भाषा, साहित्य या नाटक आदि सभी विषयों में इसे वैज्ञानिक रूप से स्थापित करने का प्रयास करना होगा।

यदि हम इसके दूसरे पहलू पर ध्यान दें तो हमें पाठ्यक्रम बनाते समय और उस पर चर्चा करते समय यह ध्यान रखना होगा कि भारतीय ज्ञान को किसी बिंदु या महत्वपूर्ण बिंदु (किसी कोष्ठक या बॉक्स में बंद) के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि किसी कहानी या व्याख्यान के रूप् में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। तभी बच्चों की इसमें रुचि बढ़ेगी। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षक कक्षा में लोकतंत्र के बारे में चर्चा करा रहा है, तो उसे पूर्वी भारत में लोकतंत्र-पूर्व में प्रचलित राजनीतिक व्यवस्था और अन्य प्रणालियों या किसी उपलब्धि से अवगत कराया जाना चाहिए जिसके द्वारा वह पुराने ज्ञान को नए ज्ञान के साथ जोड़ सके। इसे निरंतर सक्रिय रखने के लिए अभिनय प्रतियोगिता, भाषण, वाद-विवाद, भ्रमण आदि तरीके भी अपनाने चाहिए। इससे बच्चों में भारतीय इतिहास, परंपरा और साहित्य के प्रति जागरुकता पैदा होगी।

संस्कृति और कला के बारे में ज्ञान प्रदान करने के लिए समय-समय पर स्थानीय कलाकारों का प्रदर्शन आयोजित किया जाना चाहिए और उन्हें सहभागी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समकालीन कलाकारों को आमंत्रित किया जाना चाहिए और बच्चों को संग्रहालय भ्रमण पर ले जाना चाहिए। इसके अलावा भारत की नदियों, पहाड़ों, झीलों आदि पर प्रोजेक्ट बनाने का भी सुझाव दिया जाना चाहिए, जिससे बच्चे यह भी जान सकेंगे कि स्थानीय समस्याओं को स्थानीय नियमों और तरीकों से कैसे हल किया जा सकता है। इससे यह समझने में भी मदद मिलेगी कि इस स्थानीय ज्ञान की वर्तमान समाज के लिए क्या प्रासंगिकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हर कोई पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण पर ध्यान दे रहा है। यहां शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को पर्यावरण संरक्षण और वृक्षारोपण के लिए प्राचीन काल में किए गए कार्यों से अवगत कराएं और साथ ही उन्हें उस समय की महान उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी दें। उदाहरण के लिए, प्राचीन कलाकृतियों में पीपल के चित्र की क्या आवश्यकता थी? धार्मिक ग्रंथों में पीपल, बरगद और नीम के वृक्षों को उपयोगी क्यों माना गया है? हम माथे पर चन्दन का टीका क्यों लगाते हैं? आदि ऐसे कई प्रश्न हैं जिनके बारे में शिक्षार्थी को बताना चाहिए ताकि वह इसकी उपयोगिता अपनी भावी पीढ़ी तक पहुंचा सके।

इस प्रकार के शाश्वत ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान का समावेश करके पढ़ाने वाले शिक्षक बहुत सीमित मात्रा में उपलब्ध होते हैं, इसलिए इसके लिए शिक्षकों को दोष नहीं दिया जा सकता, लेकिन अब उन्हें फिर से तदनुसार प्रशिक्षित किया जा सकता है। इसके लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका उल्लेखनीय है। यह स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा में छात्रों के बहुआयामी विकास के लिए आवश्यक सुधार प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी का बचपन से ही ध्यान रखना, शिक्षा संरचना में और सुधार करना, शिक्षण प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाना, परीक्षा प्रणाली में सुध ार करना तथा प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान को नये पाठ्यक्रम में लाना है। इसके लिए वह शिक्षा के प्रारूप को अपनाकर छात्रों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानता है। इसके अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित ज्ञान, विज्ञान और दर्शन के समन्वय पर जोर दिया गया है। यदि इस शिक्षा नीति का क्रियान्वयन सफल एवं सुनियोजित रहा तो निश्चित ही यह शिक्षा नीति भारत को वैश्विक पटल पर एक नये आयाम पर स्थापित करेगी। भारत की शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए सनातन ज्ञान और वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करना बहुत जरूरी है। विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए ज्ञान दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए निर्देशों एवं कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक है कि हम सबसे पहले इन निर्देशों को अन्वेषणात्मक ढंग से स्वीकार करें। उसके बाद पाठ योजना, शिक्षण अभिकल्प और सीखने से संबंधित उपकरण आदि पर ध्यान केंद्रित करें। सत्यता और वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर ही हम भारतीय ज्ञान परंपरा और शाश्वत ज्ञान को सुचारू रूप से आगे बढ़ा सकते हैं, तभी आने वाली पीढ़ी इस भारतीयता का अनुभव कर सकेगी।

संदर्भ:

1.एनईपी(2020) नेशनल एजुकेशन पॉलिसी .न्यू दिल्ली: एम0एच0 आर0डी0
2.झा कन्हैया (2022), "शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता " दैनिक जागरण संपादकीय आलेख, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा (उ0प्र0)।
3.प्रो. गीता सिंह, (2022) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता, आरहत बहुविषयक अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान जर्नल, ग्प् (ए),8-12.
4.त्रिवेदी राकेश (2014), "भारतीय शिक्षा का इतिहास" ओमेगा पब्लिकेशन (दरियागंज) नयी दिल्ली।
5.https:èèwikipedia-orgèwikiभारतीयऋज्ञानऋपरम्परा